

- विषय कोड **001** परीक्षा का विषय **हिन्दी** (विश्व)
- परीक्षा का माध्यम **हिन्दी** परीक्षा की दिनांक **12/3/200**
- परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर कोड सेट
(सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरे **U-2001 D**

परीक्षा के नाम की सील

हस्तसंकेतक 8740195



केन्द्र क्रमांक की सील

C. K. Nandeha

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक

उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में **तीन** अंकों में **3**

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक **10** में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक K

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	4	6	1	5	7	5	1
---	---	---	---	---	---	---	---	---

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

चार छः मुक पत्र पांच म

B हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) Mah

S नाम जयशंकर शरण पद

E पता/संस्था मानव जवाहर नगर 3

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

R.K. Nandeha
हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकायें सही स्थिति में यथावत रखी हुई हैं। उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कवर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक

हस्ताक्षर (परीक्षक) हस्ताक्षर (उपमुख)

परीक्षक क्रमांक **R.K. Nandeha**
R.No. - 8740195

दिनांक.....

दिनांक.....

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ
3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कवर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

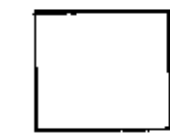
परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

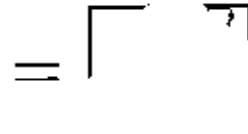
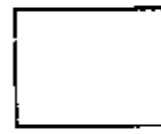
मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3



+



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 3 के अंक

500 अंक



प्रश्न क्र. का उत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थानों का चयन

i) 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' गजानन माधव मुक्तिबोध की रचना है।

ii) आत्मकथा लेकर स्वयं अपने जीवन की कथा पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है।

iii) शांकराचार्य ने ग्रंथ 'शांकर भाष्य' की रचना आहतूत द्वारा के नीचे की।

iv) 'मनुष्य प्रेम सह बँडूठी' कवि जयसी का मानना है।

v) सुरक्षा को कष्ट होता है मनोहर की कदवडवा पर।

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंक का योग



प्रश्न क्र. १ का उत्तर

सही विकल्प

i) 'कामायनी' इस युग की रचना है:
(ग) छायावाद

ii) तेन्दू काम के नाटककार हैं:
सामकृष्ण

iii) 'अष्टयज्ञ मूढयज्ञ' निबंध साहित्य की
इस विधा में लिखा गया है:
(ख) ल्यंग्य

iv) संकर सृष्टि कहा जा सकता है
(घ) लोक संस्कृति

v) जराधुमार जलज ने नवगीत के
माध्यम से उन पथिकों को
पेरित किया

(ख) जो मणिमं के बिलगुल समीप हैं।



प्रश्न क्र. 3 का उत्तर

i) 'प्रेमभक्ति' का मूल आधार 'रति' है। सत्य

ii) राष्ट्रभावा को अंग्रेजी में 'आफिशियल लैंग्वेज' कहते हैं। असत्य

iii) कविता का आभूषण अलंकार है। सत्य

~~बड़े-छोटे सुख के संचारिता अभावतीचरण है। सत्य~~

~~नये मेहमान मुकांकी में उच्चवर्गीय परिवार की समस्या को उद्घाटित किया गया है। असत्य~~

B
S
E
M
P



6

थो



प्रश्न क्र. 4 का उत्तर

सही जोड़ी

i) बाल्मीकि वात्सल्य के चिह्न हैं — सूरदास

ii) व्यंग्य की प्रधानता — नयी कविता

iii) विचार व्यक्त करने वाले वाक्य

108

iv) 'प्रताप फ़ा' — फ़ौजखाना

v) मनोविकार का विवेचन — भय

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग



प्रश्न पं. 5 का उत्तर

उत्तर- i) राजरानी देवी।

उत्तर- ii) आकाश

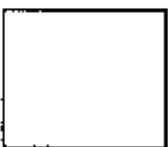
उत्तर iii) काला

उत्तर B iv) वीर युवाओं का।

उत्तर S vi) गुप्सा (धुणा)।

S
E
M
P

P. T. O



पृष्ठ के बॉक्सों का योग



प्रश्न क्र. 19 का उत्तर

अपठित गद्यांश

संस्कार ही

जायेगा।

उत्तर 1)

उपर्युक्त गद्यांश का उचित वीथिक 'शिक्षा' है।

B उत्तर 2)

उपर्युक्त गद्यांश का सारांश इस प्रकार है -

S
I
N
P

~~संस्कार शिक्षा है, जो इंसान को इंसान बनाती है। शिक्षा का उद्देश्य मात्र सुरुवात ही नहीं वरन् जीवन को सही दिशा देना। प्राचीन समय से तमिान समय तक शिक्षा घरालों में बहुत अंतर आया। अब हमें शिक्षा में व्याप्त दोषों को दूर करना है।~~

उत्तर 3)

अंग्रेजी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य सुरुवात था।



9

+

पृष्ठ 9 क अंक



पत्र क्र. 18 का उत्तर

प्रति,

पुलिस अधीक्षक महोदय,
जिला पुलिस थाना,
देवास (म.प्र.)

विषय:- मोहल्ले में चोरी की घटनाओं में शहिद हेतु
शिकायत-पत्र।

महोदय,

मैं आपका ध्यान नव विकसित मोहल्ले
रंगवावड़ी की तरफ आकर्षित करना चाहता हूँ।
जहाँ पिछले कई दिनों से चोरी की घटनाएँ
घटित हो चुकी हैं तथा घटनाओं में शहिद हो
ही हैं। जिससे मोहल्ले में अय तथा असुरक्षा
वातावरण निर्मित हो गया। मोहल्लावासियों के
नव रात का सुन उठ गया है। अतः
आप उपयुक्त कार्यवाही करते हुए मोहल्ले में
पुलिस कमियों को संख्या तथा पुलिस शक्ति
शक्तिशाली बनाया। कृपया कृपया धन्यवाद।

दिनांक

12/3/2009

स्थान:- देवास

धार्मी

नागरिक गण
रंगवावड़ी मोहल्ला

B
S
E
M
P

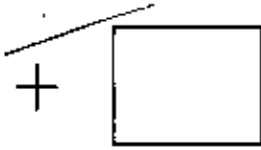


पृष्ठ के अंकों का योग

10



योग 4 पृष्ठ



पृष्ठ 10 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र. 17 का उत्तर

मुझ पढ़ाया की संक्षिप्त प्रसंग सहित व्याख्या

बानी जग रानी ————— नई-नई

संक्षिप्त:-

प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य पुस्तक हिन्दी विशिष्ट 'स्वाति' के पद्य खण्ड के 'भाक्ति' शीर्षक के 'बानी' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचियता 'केशवदास' हैं।

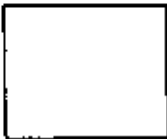
प्रसंग:-

प्रसक्त पद्य में 'केशवदास' की नू बानी जग रानी अर्थात् मा सरस्वती की उदारता का बखान किया है।

व्याख्या:-

कवि माँ सरस्वती की उदारता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि बानी जग रानी की उदारता का वर्णन कौन कर सकता है? अर्थात् माँ सरस्वती इतनी उदार हैं कि उनको उदारता का वर्णन

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग



B
S
E
M
P

कोई माते नहीं कर सकती है। देवता, पसिह्द सिह्द, रिषिराज, तपह्दह्द सभी सरस्वती को उदारता का वर्णन करते करते हार गूम परतु उनकी उदारता का पूर्ण वर्णन न कर पाय। श्रुतकाल, वर्तमान काल, भाव्यकाल उनकी उदारता का वर्णन करता था, करता है और करता रहेगा। फिर भी केशवदास कहते हैं कि कोई भी उनकी उदारता का संपूर्ण वर्णन करने में असमर्थ नहीं रहा। सरस्वती माँ के पति अथवा ब्रह्मा जी चार मुखों से, शिव पाँच मुखों से तथा उनके नाति कार्तिकेय छः मुखों से उनकी उदारता का वर्णन करते हैं। परतु से तीनों भी उनकी उदारता का वर्णन कभी न कर पायें।

मूल्यसौंदर्य :-



पृष्ठ के अंकों का योग

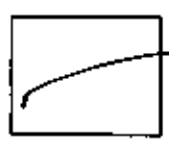
- (1) भावने भाव की पहचानता।
- (2) अनुपास अक्षकार।
- (3) भाषा सरल, सहज एवं सुलोच्य है।
- (4) माँ सरस्वती को उदारता का वर्णन एक मनोरम रूप से प्रस्तुत है।

12

योग

पृष्ठ

+



पृष्ठ 12 के अंक

=



कुल



प्रश्न क्र. 16 का उत्तर

हे प्रभु! (जी कुंभा)

संदर्भ:-

पुस्तक गद्य हमारी पाठ्यपुस्तक हिन्दी विशिष्ट 'स्वाति' के गद्य खंड से ली गई है। जिसके लेखक डा. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' हैं। तथा पाठ का नाम 'तात्या लोपे' है। जिसके लेखक डा. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' हैं।

प्रसंग:-

पुस्तक गद्य में लेखक ने तात्या लोपे के द्वारा ली गई कुसुम का वर्णन किया है।

व्याख्या:-

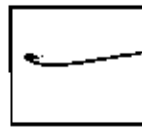
तात्यालोपे के स्थान पर मुझे वीर व्यक्ति को अंग्रेजों के हवाले कर दिया गया। अंग्रेजों ने तात्यालोपे को कभी देखा नहीं था इसलिए उन्होंने उस वीर को तात्यालोपे समझकर उसे फासी चर अलका दिया। परंतु यह बात जब

B
S
E
M
P

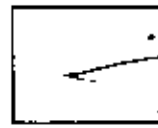


पृष्ठ के अंकों का योग

13



योग पूर्व पृष्ठ



पृष्ठ 13 के अंक



B
S
E
M
P

तात्यालोप को पूता चक्री तो वे बहुत
 क्रोधित हुए। उन्होंने आवाज में आकर
 कहा, हे प्रभु! मुझे अब वह शाक्त का
 जिससे मैं उस वीर को खून का
 बदला देने में समर्थ हो सकूँ।
 अब मुझे फिर स माँ काली की
 आशु करनी है तथा स्वयं को गुप्त
 रखकर अर्थात् अंग्रेजों के सामने
 उन आकर उस वीर की आत्मा
 को जाते पहुँचाना है और जब तक
 मैं अपना बदला माँ के संपूर्ण
 या उद्देश्य को पूरा नहीं कर लेता
 मुझे चैन नहीं। मैं संयासी वेश
 धारण कर जीवन भर दुःखों का
 वरण करवगा तथा सेना चक्रेकी कर
 अपनी एक वीर सेना का निर्माण
 करूँगा। जो कि अंग्रेजों के खिलाफ
 जीतने में मेरा साथ दे। मैं उस
 मुक्तर कार्य का पालन करूँगा।
 अब तक मैं सिर्फ खूबने राजेश
 जाता आया हूँ। परंतु अब मैं
 अपनी भारत माँ तथा उस वीर
 के लिये जाऊँगा।



पृष्ठ के अंकों का योग

$$\text{पृष्ठ} + \text{पृष्ठ} = \text{कुल अंक}$$



लि

- :-
- i) भाषा एक ही सहज है।
 - ii) भाषा परितृप्त एवं परिभाषित है।
 - iii) वाक्य सारगर्भित है।

प्रश्न क्र. 15 का उत्तर

डॉ. रघुवीर सिंह का साहित्यिक परिचय

(क) दो रचनाएँ :-

- * यशोधरा।
- * जीवन कुण।

(ख) भाषा शैली :-

डॉ. रघुवीर सिंह की भाषा व्याकरण सम्मत, औचित्य प्रधान, परितृप्त एवं परिभाषित शब्दों की है। हिन्दी में शब्द चयन सटीक है। तथा भाषा में हिन्दी के शब्दों के अतिरिक्त फ़ारसी, फ़ारसी, तत्सम, तदस्य एवं अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी रचनाओं में सहज ही दिख पड़ता है। आपने आपकी रचनाओं में मुहावरों एवं लोकोक्ति का प्रयोग

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग



भी किया है। जिससे भाषा में प्रवाह आ गया है। आपने साधारण जन भाषा को अपनी सुंदर भाव-भूमि से सजाया, सवारा सुबे प्रस्तुत किया है। भाषा के अकुक्षुण विषय का प्रतिपादन अधिक प्रभावी बन पड़ा है।

डा. रघुवीर सिंह ने मुख्य रूप से वर्णनात्मक, सूत्रात्मक, निबंधात्मक, ग्लान्मक तथा कहीं कहीं मार्मिक वर्णन इन शैलियों को अपनाया है। जिससे चर्चानार्थ आह्वानिय बन पड़ी है।

साहित्य में स्थानः -
 हिन्दी साहित्य में डा. रघुवीर सिंह के रूप में सदैव चिरस्मरणीय बन रहेंगे। इनकी भाषा शैली के द्वारा उन्होंने हिन्दी साहित्य में एक नए निबंधकार के रूप में सभी का ध्यप्रदर्शन करेंगे।

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग

पूर्व पृष्ठ

+

पृष्ठ 16 के अंक

=

कुल अंक



प्रश्न क्र. 14 का उत्तर

मैथलीशरण गुप्त जी की काव्यगत परिचय

दो रचनाएँ :-

- * साकेत
- * भारत-भारती

(रि.) भावपदा :-

मैथलीशरण गुप्त जी का भावपदा समूहक है। उनकी रचनाओं में देशप्रेम अत-तत्र हास्य मोचर है। उन्होंने समाज में व्याप्त बुराईया, अधाविश्वास, कुप्रथा, अंग्रेजी शासन का अन्त के पाने विद्रोह तथा कानि के पाने हो रहे शोषण पर सदैव कुवाराधान किया है। मैथलीशरण गुप्त के आराध्य देवी राम थे। मैथलीशरण गुप्त की रचनाओं में भारतीयों के मनोभाव में बदलाव किया है तथा देश के लिये कुछ सोचनों को मजबूर कर दिया। अपनी इसी राष्ट्रप्रेम

B
S
E
M
P



के कारण वे कई बार पुरस्कृत भी हुए हैं। तथा उन्हें 'राष्ट्रकवि' भी कहा जाता है।

कलापदा :-

मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपनी रचनाओं तथा अनेक प्रयोगों के फलस्वरूप अपने कलापदा अद्वितीय बना दिया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में वीर रस, हंगार रस, शीत रस तथा क्रोध रस का अधिक प्रयोग किया है। तथा उनके कृत्य रचनाओं में शोष गुण प्रधान है। उन्होंने अपने समय तक व्याप्त सभी छंद तथा धातुकारों को अपनी रचनाओं में उद्घृत किया है।

साहित्य में स्थान :-

मैथिलीशरण गुप्त जी एक महान साहित्यकार होने के साथ-साथ एक मेधावी विचारक तथा एक महान खोजकर्ता भी हैं। तथा अपनी इसी सद्भाव के चलते उन्हें 'राष्ट्रकवि' से सम्मानित किया गया।



पक्ष 13 का उत्तर

(अ) विभाषा :-

विभाषा का क्षेत्र बोलो
से विस्तृत तथा भाषा से कम होता
है अर्थात् बोलो का परिष्कृत रूप
है 'विभाषा'। विभाषा एक प्रदेश
या प्रदेश के एक भाग को जन
भाषा होती है तथा इसमें साहित्य
रचना भी होती है। विभाषा किसी
एक क्षेत्र या प्रदेश के लोगों के
मध्य व्यवहारिक भाषा तथा
संपर्क भाषा का कार्य करती
है। राजस्थानी तथा अन्य विभाषा
है।

विभाषा की दो विशेषताएँ

i) विभाषा का क्षेत्र बोलो से व्यापक
होता है।

ii) विभाषा किसी प्रदेश के लोगों के
मध्य संपर्क भाषा होता है तथा
इसका लिखित साहित्य भी होता है।



(ख) निम्नालिखित वाक्यों को निदेशानुसार परिवर्तित कीजिए :-

(i) सत्य की सहा जीत होती है! (प्रश्नवाचक)
क्या सत्य की सहा जीत होती है?

(ii) यह काम कर कीजिए? (निषेधवाचक)
यह काम मत कीजिए।

प्रश्न क्र. 12 का उत्तर

उत्तर :- साहित्य में काव्य की विशेषता
बताने वाले गुणों को 'काव्य गुण'
कहते हैं।

साहित्य में काव्य गुण तीन
प्रकार के होते हैं।

* पसाद गुण

- माधुर्य गुण

- भोज गुण

(भोज गुण के बारे में अगली P.T.O
पृष्ठ पर लिखा है)



B
S
E
M
F

आज गूणः -

जब किसी काव्य को पढ़ने या सुनने पर मन में आक्रोश, उमंग, उत्साह तथा उत्तेजना के भाव एकट हो तब उस गूण को 'आज गूण' कहते हैं। आज गूण में होमलक्षित पदावली का उपयोग नहीं किया जाता है। आज गूण में वीर रस, क्रवण-रस तथा कठोर वणा मत् सटीक वरिदा का उपयोग किया जाता है। आज गूण में वीर रस प्रधान रहता है। या यह भी कहा जा सकता है। वीर रस से परिपूर्ण रचनाओं में आज गूण निहित है। शिवाबावनी, धृतराज दशक इसी प्रकार की रचनाएँ हैं।

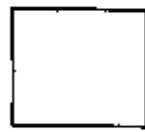
उदाहरणः - सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित आरव्यानक मातेका रसका उदाहरण है।

बुढ़े लो. ठर खोलो के मुँह, हमने सूनी कही थी।
रबूळ लजे मदीनी, वो तो झौसी वाली रानी थी।



पृष्ठ के अंकों का योग

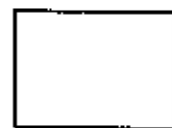
21



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 21 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र. 12 का उत्तर

उत्तर

नैनोटेक्नोलॉजी की एक भाषा के शब्द 'नैनो' अर्थात् सूक्ष्म या बौना से बना है।

नैनोटेक्नोलॉजी वह युक्ति है जो कि किसी परमाणु या अणु को जब नैनो क्षेत्र प्रभावित करता है, जिससे उसके गुणों में आश्चर्यजनक परिवर्तन होते हैं, जिसके फलस्वरूप हमें आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होते हैं। इस तकनीक को ही नैनोटेक्नोलॉजी कहते हैं।

B
S
E
M
P

एक मीटर के अंशवत् हिस्से को नैनो कहते हैं तथा एक मीटर से 10⁹ भाग नैनो मीटर को 'नैनो डोमेन' कहते हैं।

नैनोडोमेन को नैनोटेक्नोलॉजी द्वारा बनाया जाता है। तथा नैनोडोमेन बनाने के लिए आश्चर्यजनक परिणाम सामने आते हैं जिनका उपयोग नैनो मेटिरियल बनाने में किया जाता है।



पृष्ठ के अंकों का योग

नैनोटेक्नोलॉजी के अंतर्गत नैनोडोमेन बनाने में अणु का परमाणु के गुणों में कई



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 22 के अंक

कुल अंक



B
S
E
M

परिवर्तन होना चाहिए हो जाते हैं। ये परिवर्तन मैकेनिकल, थर्मल, आणविक तरंगों पर परिवर्तन करना प्रारंभ कर देते हैं जिससे अणु या पुरमूक के गुणों में आश्चर्यजनक परिवर्तन होते हैं तथा धात्विक गुण अपुसू, मृत्तमिअने खिगते हैं। इस प्रकार नैनोडोमन का निर्माण होता है। नैनोडोमन के दौरान अणु का आकार और भी कम हो जाता है जिसके परिणाम स्वरूप उसकी आकषण क्षमता और भी अधिक बढ़ जाती है। तथा इसके आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होते हैं तथा इसका उपयोग नैनोमटेरियल से कई साधनों को प्राप्त है। एक अणु सिद्ध उपयोग में आया जाता है।



पृष्ठ के अंकों का योग



प्रश्न क्र. 9 का उत्तर

उत्तर :- नदी के द्वीप कविता 'अश्वि' द्वारा रचित एक रचना है। जिसमें उन्होंने नदी को समाज तथा द्वीप को व्यक्त मानकर एक रचना की

जिस प्रकार द्वीप नदी से ही विकसित एक पक्का कित होना है वही उसी प्रकार व्यक्ति भी समाज सहित स्वयं को अज्ञान तथा गतिहीन समझता है। नदी द्वीपों को आकार देती है। उसी प्रकार समाज ही व्यक्ति में व्यक्त विभंगति का बुझा आकार को नष्ट कर देता है। नदी द्वीप को संस्कार देती है वही द्वीप नदी से ही रहना चाहती है। वही नदी उस अपने से ऊंचा हो करना न चाहे या उसे डूबो हो वही प्रकार व्यक्ति भी समाज में ही रहना चाहता है। कवि ने स्वयं को समाज की नदी रूपी समाज ही व्यक्ति को संस्कार, संशोधन, सुकृता

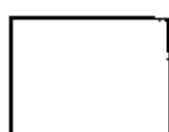
B
S
E
M
P



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुल अंक

तथा धारितारे कवि की भावना सिरवाला
 ही नही से ही द्वीप का आस्तित्व
 है। यही यदि नही न हो तो द्वीप
 का कोर भावित्य नही। इसी
 प्रकार समाज से ही व्यक्ति का
 निर्माण एवं विकास हुआ।

नी के द्वीप कविता में नही इस प्रकार
 नाथ हमें कई संस्कारों से अपूर्ण
 करता है, जो हमारे विकास के लिए
 आवश्यक है।

B
S
E
M
P

प्रश्न क्र 8 का उत्तर

कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' के अनुसार
 विश्व का कल कलकल



पृष्ठ के अंकों का योग

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल



परीक्षक के लिये

- 1. केन्द्र की सील
- 2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
- 3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
- 4. केन्द्र क्रमांक
- 6. परीक्षा का नाम
- 7. विषय Hindi (Sheet) माध्यम Hindi
- 8. दिनांक 12/03/2009

Handwritten signature and date: 12-3-09



पृष्ठ

प्रश्न क्र. 8 का उत्तर

उत्तर:-

कवि विवमंगल सिंह 'सुभद्र' के अनुसार विश्व जब झुकता है जब किसी वीर को विश्व को झुकाने का सामर्थ्य हो।

जब कोई वीर आँधी के समान तप धारण कर लेता है तो वह अपने सामने आने वाली विपरीत परिस्थितियों का आक्रमकता के साथ सामना कर अपने प्रयत्न पर स्वामिमान पूर्वक दृष्टिकर विश्वास प्राप्त करता है। जिन्हें विश्वास है प्राप्त होता है। जिन्हें अपनी जीत पर पूरा विश्वास है। मुझे वीर मुझे साहसी व्यक्ति स्वामिमान हृदयनिष्ठा एवं श्रमानकारी के साथ जीवन पथ पर अग्रसर होता है।

B
S
E
M
P



पूरक के अंतर्गत



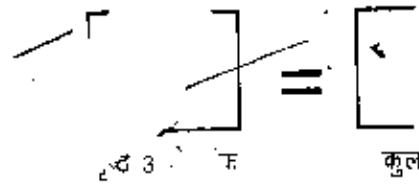
तब उसे सिर्फ अपना विजयी लक्ष्य ही
दिरवार होता है।

वीर ~~हो~~ अपने जीत के
विश्वास एवं विजयमान बन कर दुःख
आने के विपदाओं का सामना करता
है। वीर ~~हो~~ अपने पराक्रम से अपने
विरोधियों को अपने सामने झुकने
पर मजबूर कर देता है। विश्व को झुकाने
के लिए वीर में अथाह विश्वास, साहस,
निडरता, एवं निश्चय होता है। विश्व में
सबसे महान लोगों का नमस्कार
किया है।

इस प्रकार वीर, विश्वासी
एवं स्वामिनी व्यापक है विश्व का
झुकाने का सामर्थ्य रखता है।

S
E
M
P

3



पद्य का उत्तर

महाकाव्य एवं खण्डकाव्य में अंतर

i) महाकाव्य एक विस्तृत रचना है, जिसका उद्देश्य महान होता है जबकि खण्डकाव्य इतना विस्तृत नहीं है तथा इसका उद्देश्य महान नहीं होता है।

ii) महाकाव्य में कई रस, अलंकार तथा छंदों का प्रयोग होता है, इसमें नायक के समग्र जीवन का वर्णन होता है इसका प्रारंभ भगवत्पूजा से होता है जबकि खण्डकाव्य में एक रस, एक अलंकार तथा एक छंद प्रधान होता है, इसमें नायक के जीवन के किसी एक खण्ड का वर्णन होता है।

महाकाव्य का नाम तथा रचनाकार
रामचरितमानस - तुलसीदास

खण्डकाव्य का नाम व रचनाकार
पंचवटी - सूरदास

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग

4



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 4 के अंक

=



कुल अंक



पृष्ठ 4 का उत्तर

उत्तर:-

गाँतमबुद्ध लोगों के लिए अमरत्व प्राप्त करने के लिए संन्यासी बन गए तथा महायज्ञ में उन्होंने अपनी पत्नी तथा अपने पुत्र सहज को त्याग कर दिया। गाँतमबुद्ध का द्वारा यशोधरा का त्याग करने पर यशोधरा चिर-विरिणी हो गई। इसके लिए रास रंग, तहलु आदि का कोई महत्व नहीं है। यशोधरा को आखे से नम रहती है। उसे बसंत महल की हरिमा विरवाही नहीं देती। उसकी आखों का प्रकार पहले जैसा नहीं रहा। यशोधरा के होना पर सदेव वेदना तथा आखा में आँसू छाम रहते हैं। यशोधरा मरना चाहती है। आँसू को आँसू मानी परंतु अपने अपनी पति को मरने की आशा भी नहीं ली है तथा उनके ध्यान पर उनका स्वागत करने के लिए बसकि आँसू के कारण वह मर भी नहीं सकती। पति विद्योय के कारण सिद्धाय को आँसूना भी उसका

B
S
E
M
P

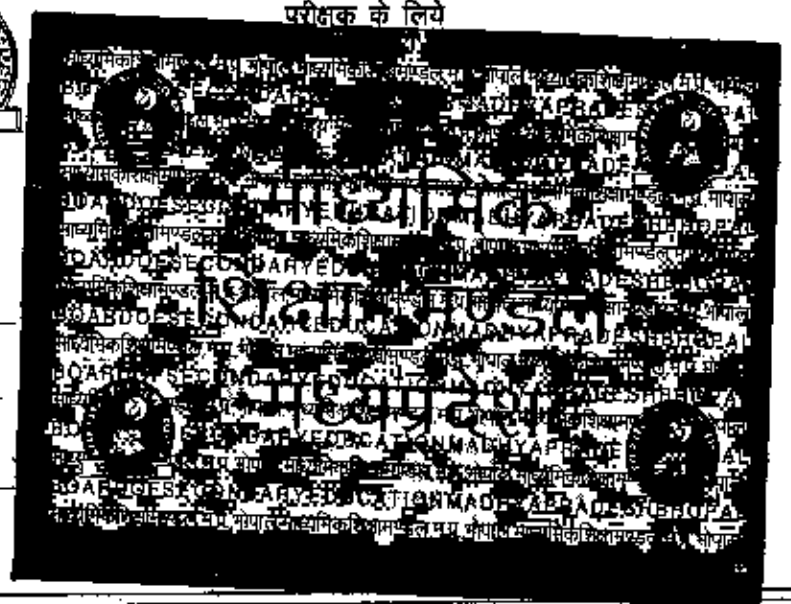
के अंक का योग

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षक के लिये

- 1. केन्द्र की सील
- 2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
- 3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
- 4. केन्द्र क्रमांक
- 5. परीक्षा का नाम
- 6. विषय
- 7. दिनांक
- 8. माध्यम

12/3/09



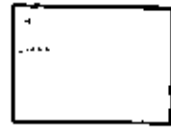
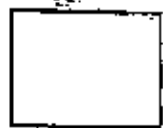
Hindi Hindi
12/3/2009

B
S
E
M

ताप नही प्रियता सकती। तथागत और
 उसका प्रेम अमर है। कष्ट समय मर
 जरा भी उसके प्रेम को कम नही
 कर सकता है।
 गौतम के बुद्ध के
 कपिलवस्तु आने पर वह उनसे मिलना
 चाहती है परंतु स्वाभिमानी होने के
 कारण उनसे मिल नहीं सकती है। तथा
 बुद्ध के द्वारा शिक्षा मांगने पर वह
 उन चिर-वियोग को मिटा देती
 है। जब वो यह सोचती है
 क्या वियोगो हृदय को ये निःश्वास
 भी कभी प्यार को ठंडी दुआरी
 प्यार बन सकेंगे ?



पृष्ठ के अंकों का योग



प्रश्न क्र. 20 का उत्तर

निबंध

साहित्य और समाज

प्रपंखा :-

- * प्रस्तावना
- * साहित्य का अर्थ
- * साहित्य का समाज पर प्रभाव
- * समाज का साहित्य पर प्रभाव
- * उपसंहार

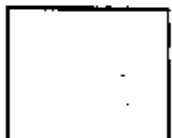
जहाँ सूर्य

अंधकार है वहाँ, का साहित्य नहीं।
मूढ़ है वह देहा, जिसका साहित्य नहीं।

प्रस्तावना :-

मानव ने सर्वत्र अपने जीवन को उत्कृष्ट एवं कुशलता पूर्वक बनाने का प्रयास किया है। इसलिए उसने जीना के साधनों को अंकित किया। प्राणियों को उचित आकार दिया तथा उचित शब्दों का सृजन कर वाक्य रचना की। साहित्य भी एक कला है जो समाज का पर्यवेक्षण

B
S
E
M
P



3



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 3 के अंक

कुल अंक



B
S
E
M
P

सुब मनोरंजन करता है।

विस्तार
 स्वयं के प्रकार से चारों तरफ का
 अधिकार नष्ट हो जाता है तथा
 आक्रोश का आगमन होता है। ठीक
 उसी प्रकार साहित्य समाज में
 चलना का पार पसार करना
 साहित्य समाज में ही पल्लवित,
 प्राणित एवं विकसित होता है।
 तथा - समाज साहित्य की उपास्थान
 में स्वयं को मानविक, ऊर्जावान एवं
 चलना में परिपूरित महसूस करना
 है। साहित्य में समाज में
 महत्व संबंध है। साहित्य में
 समाज का जो एक दूसरे के
 पुरक है।

साहित्य का अर्थ :-

साहित्य मुख्य
 के भावों से सजी हुई एक सुंदर
 प्रकृत धारण है। अर्थात् साहित्य
 समाज को अभिव्यक्त करता है।
 इस कारण से कई साहित्यकारों
 ने साहित्य को समाज का दर्पण तो
 करे न साहित्य का समाज का
 दीपक कहा है। वास्तव में साहित्य

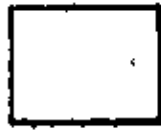


पृष्ठ 3 के अंक का योग

4



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 4 के अंक

कुल अंक



वह जिसमें सभी के हित यथा संभव सम्मिलित हो भावना हो साहित्य साथ क बाँटने का एक समीचीन गुँथी है माला है जिसमें सत्यम्, शक्ति, सुंदरम् का समावेश है साहित्य का विकास के साथ ही समाज का विकास होना है यथावत दोनों परक है

साहित्य का समाज पर प्रभावः -

साहित्य का समाज पर प्रभाव सदैव सकारात्मक ही हुआ है। साहित्य का सम्यक्मानस समाज में आकाशवाणी के समान समाज का पथप्रदर्शन कर रहा है। सामाजिक जीवन में आदर्शों के प्रतिमान स्थापित करने में साहित्यकारों ने सदैव बालप्रथा, पदप्रथा, जेजप्रथा, छुआछूत, अंधविश्वास तथा समाज में लम्बित कुशाचारों पर सदैव कठोर चोट की है।

साहित्य के रचनाओं के कारण ही समाज हमारा बड़ा आजाद हुआ है।

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

3



परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक
6. परीक्षा का नाम
7. विषय Hindi 8. माध्यम Hindi
8. दिनांक 12/9/2009

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक

639911

1. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	4	6	1	5	7	5	1
---	---	---	---	---	---	---	---	---

2. नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

दो	नों	चार	छ	सक	पाँच	सात	पाँच	नव
----	-----	-----	---	----	------	-----	------	----

पृष्ठ

**B
S
E
M
P**

यदि माकर्मवाद का प्रभाव न होता तो नही उस भाषाद होता और नही।

क्रास। लेकिन चरजी को 'भानेद मठ' रचना का लक्ष्यमातरम् और प्रवृत्तता संग्राम में कार्तकारियों में कृष्ण का संचार करता था।

समाज का साहित्य पर प्रभाव :-
मे जो कुछ भी खालि होता है समाज में साहित्यकार उसे ही अपनी रचना में स्थान देता है। क्योंकि साहित्यकार ही एक सामाजिक प्राणी है इसलिए समाज में खालि होने वाली प्रवृत्तियों को भी प्रभावित करता है। और वह इन्ही भावनाओं को अपनी रचना में अभिव्यक्त करता है।



एव के अंकों का योग



बीरगाथा काल, रीतिकाल, वैदिककाल
 ये सभी कालों को रखना उस समय
 की घटनाओं से परिचित हो

उपसंहार :-

~~साहित्य का विकास अर्थात्
 समाज का विकास है साहित्य में समाज
 का पर्यवेक्षण किया गया है समाज
 का एक-दूसरे से धनिक संबंध है
 साहित्य ही है समाज का अतीत
 से भवमान, वर्तमान का निर्माण तथा
 भविष्य के रूप रेखा को तैयार
 करता है।~~

साहित्य समाज में व्याप्त
 बुद्धिमत्तियों पर कुवाराघात करता है।
 इसलिये हमें अपने समाज में व्याप्त
 समस्त बुराइयों के घेत को मिटाने
 के लिये साहित्य को आवश्यकता है।

B
S
E
M
P



3

+

=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 3 के अंक

कुल अंक

प्रश्न क्र. 11 का उत्तर

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार निबंध उचित मूल ताकिक शब्दों से बना एक ही रचना होती है जो कि समकालीन है।

निबंध का अर्थ ही पूरी तरह से बढ़ा हुआ परंतु वास्तविकता में निबंध मूल रूपों की रचना है।

हिंदी निबंध साहित्य को चार भागों में बाटा गया है।

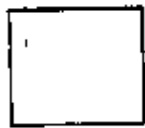
- भारतेंद्र युग
- द्विवेदी युग
- शुक्ल युग
- शुक्लानन्द युग

भारतेंद्र युग निबंध साहित्य में मूल स्थान रखा है। भारतेंद्र युग के पूर्वक भारतेंद्र ही द्विवेदी युग में निबंध का परिकृत रूप सामने आया इसके पूर्वक लक्ष्मी प्रसाद द्विवेदी ही इसके अभाव में शुक्ल युग जितने निबंध साहित्य

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

4



+



=

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 4 के अंक



का रूप ही बदल दिया। इस युग के
 पुराणिक भाषाय रामचंद्र अक्षर
 पर्याप्त अक्षरों के युग
 में निबंध के नाम आयाम
 मापित हुआ।

B
S
E
M
P

8
2
3
M
9



पृष्ठ के अंकों का योग